कथा क्रम

अप्रैल-जून, 2025

मूल्य - ₹ 60

कथासाहित्य
कला
एवं
संस्कृति
की
त्रैमासिकी

ISSN-2231-2161

वर्ष : 27 अंक : 104

अप्रैल-जून 2025

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

कहानियां

19 दीर्घ नारायण : मृत्यु का महापुरुष
25 कल्पना मनोरमा : आख़िरी मोड़ पर
32 सुधा जुगरान : औरत के भीतर की औरत
38 डॉ. कृष्णलता सिंह : नया संस्करण
68 नंदन पण्डित : सिन्दूर
72 प्रगति गुप्ता : चक चक चलनी
77 सुजाता राज्ञी : पितृ ऋण

लघुकथाएं

31 पवन शर्मा : जब वे मुस्कुराई
37 पूनम पांडे : कारण
61 पवन शर्मा : दूसरा चेहरा

कथा-नेपथ्य

05 मधुरेश : शरतचन्द्र की कहानियां : समय, समाज और स्त्री-दृष्टि

लेख

43 विनोद शाही : हिन्दी संस्कृति का विकास कैसे संभव है?
49 कर्मेन्दु शिशिर : असहमति में उठा एक हाथ-विष्णु नागर
57 रविकान्त : अंधकार, हताशा और पराजय का युगबोध : गोदान और राम की शक्ति पूजा
62 डॉ. कुमारी उर्वशी : हिंदी के दलित साहित्य का मराठी अनुबंध

कविताएं

81 डॉ. संतोष पटेल : बुद्ध हैं कि ढकते नहीं, प्रतीक चिह्न, बुद्ध उनके लिए
82 दीपाली सुतार : भीड़, अज्ञात लोक
83 अम्बिका कुमारी कुशवाहा : एक कविता
84 राजेन्द्र सजल : इस दौर में प्रेम, मेरे शहर की सरहदों के पार

रंगमंच

85 तेजस पुनियां : सम्पूर्ण पुरुष की तलाश में सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक

बड़ा पर्दा

91 ममता दीपक वेर्लेकर : साहित्य का सिनेमेटिक अनुवाद और मणि कौल की फिल्में

कथा शोध

95 श्वाती पाण्डेय : वृद्धावस्था में जीवनयापन की अदम्य लालसा : शाम की झिलमिल

समीक्षाएं

100 डॉ. वरुण कुमार तिवारी : रामघाट में कोरोना : कोरोना दौर का एक अहम दस्तावेज (उपन्यास : दीर्घनारायण)
103 अखिलेश कुमार : ह्रासोन्मुख जीवन मूल्यों की गाथा- हांडी भरी यातना (कहानी संग्रह : शोभनाथ शुक्ल)
105 प्रताप दीक्षित : जो इतिहास में नहीं हैं (उपन्यास : मीना गुप्ता)
107 डॉ. मीना बुद्धिराजा : अस्तित्व की मुक्ति का नया आख्यान : हेति (उपन्यास : सिनीवाली शर्मा)
110 प्रताप दीक्षित : त्रासद समय की निस्संग भंगिमाओं के प्रतिरोध की कहानियां (कहानी संग्रह : महावीर राजी)
2 सम्पादकीय : पहलगाम : आतंक का नया अध्याय

आवरण : बंसीलाल परमार
रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन परामर्श
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 60 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-900 ₹, आजीवन 4000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-400 ₹, त्रैवार्षिक-1100 ₹, आजीवन 5000 ₹

(kathakram SBI, Mahanagar Branch, Lucknow A/c 10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी.-देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

पहलगाम : आतंक का नया अध्याय

पिछले डेढ़ माह से देश आतंकवाद की नयी चुनौती से जूझ रहा है। एक अरसे बाद एक सार्वजनिक स्थल पर घूमने और मौज मस्ती करने आए नादान और निहत्थे युवा पर्यटकों को उनके परिजनों के समक्ष गोलियों से भून कर एक नृशंस घटना को अंजाम दिया गया। इस प्रकार की घटनाओं में धर्म की भूमिका सर्वविदित है पर मेरी जानकारी में शायद पहली बार पीड़ितों का धर्म सुनिश्चित कर, उनसे कलमा पढ़वा कर या ख़तना देखकर यह बर्बर वारदात अमल में लाई गई। इस जघन्य हिंसा का शिकार अधिकांश युवा और नवविवाहित थे जो ब्याह के बाद अपनी जीवनसाथी के साथ कश्मीर की दिलकश वादियों में लुत्फ उठाने आए थे। उन युवतियों के सामने उनके जीवनसाथी की हत्या कर आतंकियों ने उनके पूरे जीवन को लहूलुहान कर दिया। इस घटना के प्रतिकार स्वरूप भारत सरकार ने पाकिस्तान के विरुद्ध चलाए गए अभियान को 'ऑपरेशन सिन्दूर' नाम दिया।

स्वाभाविक है सरकार के साथ समूचा देश आक्रोशित हो चला और पाकिस्तान द्वारा चलाए और प्रोत्साहित किए जा रहे आतंकवाद को खत्म करने का उन्माद सर्वत्र देखा जाने लगा। देशवासियों की अपेक्षा थी कि भारत द्वारा पाकिस्तान पर करारा प्रहार कर उसे नेस्तनाबूद कर दिया जाए जैसे इजरायल द्वारा यहूदी क्षेत्र विशेषकर गाजा पट्टी में लगातार भीषण कार्रवाई कर काफी हद तक उसके वजूद को खात्मे के कगार पर ला दिया है। तमाम विरोधों के बावजूद इजरायल द्वारा तबाही और नरसंहार जारी है। हजारों की संख्या में वयस्कों के साथ महिलाओं और बच्चों को हिंसा का शिकार बनाया गया है। अमरीका के अलावा कोई देश उसके साथ नहीं है पर उसकी हिंसा, आक्रामकता और विध्वंसात्मक कार्रवाई पूर्ववत जारी है। यदाकदा शांतिवार्ता और हमलों पर रोक का प्रचार किया जाता है और दोनों देश इसके उल्लंघन के लिए एक दूसरे को जिम्मेवार बताते हैं। यही स्थिति रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध की है। 2 जून को रूस और यूक्रेन के बीच इंस्ताम्बुल में शांतिवार्ता का समाचार आया था जबकि उसी दिन यूक्रेन द्वारा रूस के एयरबेस पर ड्रोन द्वारा भीषण आक्रमण कर फौजी संस्थान और अनेक युद्ध विमानों को नष्ट करने का दावा किया गया।

आज के दौर में इस प्रकार की स्वेच्छाचारी कार्रवाई आसान नहीं है। दुनिया के देशों की राय और विरोध को नजरअंदाज करने का बहुआयामी प्रभाव होता है जिससे देश की आर्थिक स्थिति, सामरिक शक्ति, व्यापार आदि पर व्यापक और गहरा असर पड़ता है। अलबत्ता इजरायल किसी प्रकार के प्रभाव से अछूता है। इसके कारणों की विशद और गहन व्याख्या करना यहां अभीष्ट नहीं है। पत्रिका के अक्टूबर-दिसम्बर 2024 अंक के संपादकीय में इस मुद्दे पर लिखा जा चुका है।

पहलगाम के नरसंहार के बाद भारत द्वारा पाकिस्तान अधिगृहीत कश्मीर क्षेत्र में चलाए जा रहे आतंकी संगठनों पर जबरदस्त प्रहार किया गया। पाकिस्तान के अन्य कुछ क्षेत्रों में भी ऐसे संगठनों के ठिकानों पर हमले किए गए। ऐसे भवनों को तबाह किया गया जहां से आतंकवादी गतिविधियां संचालित होती थीं। कुछ आतंकियों के मारे जाने की भी खबर है जिसकी पुष्टि करना संभव नहीं है। अच्छी बात यह

है कि भारत ने आम नागरिकों, अस्पतालों, अन्य नागरिक ठिकानों को निशाना नहीं बनाया। इसे युद्ध नहीं कहा गया। अलबत्ता सीमाओं पर सतर्कता जरूर बढ़ाई गई। पाकिस्तान द्वारा भी ड्रोन से हमले किए गए जिसका कुछ विशेष प्रभाव नजर नहीं आया। एकाएक दोनों ओर से हमलों को रोक देने की घोषणा कर दी गई जिसका श्रेय अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ले लिया जबकि भारत सरकार आज भी किसी तीसरे के हस्तक्षेप से साफ इंकार करती है और युद्धविराम (भारत और पाकिस्तान इन कार्रवाइयों को युद्ध की संज्ञा नहीं देते) का फैसला दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों की आपसी बातचीत के फलस्वरूप होना बताते हैं जो विश्वसनीय प्रतीत नहीं होता। यदि ऐसा होता तो इसकी घोषणा वार्ता के तुरंत बाद की जाती। एकाएक हमलों को रोके जाने से यह धारणा पुष्ट होती है कि कहीं किसी दबाव की भूमिका अवश्य है। फिलहाल सीमाओं पर तनावपूर्ण शांति है जिसमें किसी भी पल विघ्न आने की पूरी संभावना है क्योंकि प्रधानमंत्री ने भी कई बार कहा है कि 'आपरेशन सिन्दूर' समाप्त नहीं हुआ है और जब जरूरी हुआ, इस अभियान के अंतर्गत पाकिस्तान के विरुद्ध फिर कार्रवाई की जाएगी।

देश के अधिकांश नागरिक इस कथित युद्धविराम से संतुष्ट नहीं हैं। संसद पर हमला, मुम्बई में हुआ भीषण आतंकवादी कांड, पुलवामा, कश्मीर और इनके अतिरिक्त हिंसा की अनगिन वारदातें जो दिल्ली, अयोध्या एवं देश के अन्य क्षेत्रों में घटित होती रही हैं, से लोग दुखी व आहत हैं और 1971 में बांग्लादेश में पाकिस्तान द्वारा किए शर्मनाक समर्पण की तरह कोई कार्रवाई चाहते हैं। मेरे ख्याल से आज के दौर में यह असंभव नहीं तो मुश्किल जरूर है। विश्व के देश गुटों में विभक्त हैं जो एक दूसरे को समर्थन और संरक्षण देते हैं। इस्लाम की हिफाजत के नाम पर भी कई देश पाकिस्तान की सहायता करते हैं। इन देशों में अनेक चरमपंथी संगठन सक्रिय हैं जिनका वहां की सरकार पर गहरा दबदबा होता है। वैसे भी मुस्लिम समाज में धर्म की एक अहम भूमिका है और कट्टरपंथियों की सत्ता को चुनौती देना आसान नहीं होता। कई देशों की सरकार इन संगठनों के समर्थन के बिना सत्ता में नहीं रह सकतीं। इसलिए वे इनके द्वारा संचालित आतंकवादी गतिविधियों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से संरक्षण प्रदान करते हैं।

यदि वास्तव में ट्रंप की इस संघर्ष को रोकने में कोई भूमिका नहीं है तब एकाएक इस अभियान पर रोक लगाने का कारण समझ में नहीं आता है। यह स्वीकार्य है कि आज के दौर में फौजी कार्रवाई को जारी रखना बहुत मुश्किल है पर जिस तरह का अभियान भारत में आपरेशन सिन्दूर के नाम पर चलाया था, उसकी एक तार्किक परिणति तो होना ही चाहिए थी। सरकार द्वारा इस बारे में कुछ खुलासा करना जरूरी है।

पहलगाम की घटना का एक दूसरा पक्ष भी विचारणीय है जिसपर शायद जानबूझ कर चुप्पी धारण की गई है। यह घटना एक ऐसे टूरिस्ट स्थल पर घटित हुई जहां हजारों की संख्या में पर्यटक जाते हैं। वहां किसी प्रकार की कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं थी। हिंसा के शिकार परिवारों ने बताया कि दूर दूर तक सुरक्षा व्यवस्था के नाम पर एक सिपाही नजर नहीं आता था जिससे आतंकवादी पूरी स्वच्छंदता और स्वेच्छाचार के साथ नाम, धर्म वगैरह दरियाफ्त कर पर्यटकों को गोलियों से भूनते गए। यह कोई बहुत बड़ा क्षेत्र नहीं है और यदि वहां चार, छह पुलिस कर्मी भी तैनात होते तो इस तरह की भयावह घटना घटित नहीं होती। ऐसे स्थल पर सुरक्षा इंतजामों की अनुपस्थिति इसके कारणों पर सोचने को मजबूर करता है। सबसे दुखद यह कि इस मुद्दे पर कोई बात नहीं कर रहा है जबकि यह घटना बदइंतजामी और लापरवाही का ज्वलंत दृष्टांत है। ऐसा लगता है कि इस खामोशी की वजह भाजपा का कश्मीर की सत्ता से जुड़ाव है। जाहिर है ऐसे मुद्दों पर बात करने से स्थानीय प्रशासन और सत्ताधारी दल कटघरे में खड़े होंगे जिससे केंद्र सरकार भी अछूती नहीं रहेगी।

पर यह चिंताजनक है, इसलिए भी क्योंकि ऐसी वारदातें कभी भी हो सकती हैं। प्रशासन को इस पर पूरी गंभीरता से विचार विमर्श एवं आत्ममंथन करके भविष्य के लिए एक सीख लेनी चाहिए और तदानुसार कार्ययोजना बनानी चाहिए जिससे ऐसी नृशंस घटनाओं की पुनरावृति न हो। लापरवाह एवं अकर्मण्य अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। जिस वारदात में छब्बीस लोगों की जान गई हो, उस पर किसी भी लोकसेवक के विरुद्ध कोई कार्रवाई न किया जाना समझ से परे है। राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन इसके लिए पूरी तरह जवाबदेह है।

यह बर्बर कांड कश्मीर के टूरिज्म उद्योग पर एक गहरा

आघात है। सर्वविदित है कि कश्मीर की समृद्धि और विकास में सैलीनियों से हुई आय की अत्यंत अहम भूमिका है। कई सालों के अवरोध के बाद एक बार फिर यह क्षेत्र पर्यटकों को आकर्षित करने लगा था। लोग निर्भीक होकर कश्मीर के भ्रमण पर आ रहे थे। इस घटना ने एक बार फिर लोगों के अन्दर भय पैदा कर दिया है जिससे उबरने में खासा वक्त लगेगा। कश्मीर के काफी लोगों का इकलौता जरियामाश पर्यटन ही है। जाहिर है ऐसे व्यापारियों और परिवारों को भारी आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ेगा।

एक अन्य दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष सरकार द्वारा 'सिन्दूर' शब्द का राजनीतिक उपयोग भी है। जैसा पहले भी देखा गया है, सरकार और प्राय: सभी राजनीतिक दल हर मुद्दे को सियासत के चश्मे से देखते हैं और यथासंभव उसका भरपूर इस्तेमाल करते हैं। बिहार और पश्चिम बंगाल के विधान सभा चुनावों को देखते हुए 'सिन्दूर' को एक राजनीतिक मुद्दा बना लिया गया है और उसके नाम पर समर्थन मांगने की मुहिम जारी है। पर सरकार और उस पर काबिज सियासी दल की एक गरिमा होती है तथा उनसे अपेक्षा की जाती है कि ऐसे संवेदनशील मामले में वे ऐसी गतिविधियों से दूर रहें। वैसे भी मुझे नहीं लगता इस तरह के गिमिक्स का का आम आदमी पर कोई खास प्रभाव पड़ता है। देश के नागरिकों में अब गहरी राजनीतिक चेतना है और वे इन दांवपेंचों को भलि प्रकार समझते हैं। 2024 के लोकसभा आम चुनाव में अयोध्या से भाजपा की पराजय इसका सटीक उदाहरण है।

पिछले अंक में मैंने सरकार द्वारा बुक पोस्ट की सुविधा समाप्त करने के फलस्वरूप पत्रिकाओं और पुस्तकों के वितरण में आए गंभीर आर्थिक संकट के बारे में लिखा था। पता चला है कि सरकार द्वारा बुकपोस्ट के स्थान पर 'ज्ञानपोस्ट' सेवा आरम्भ की है जो लगभग बुकपोस्ट की तरह ही है। इसके लिए डाकतार विभाग को कोटिश: धन्यवाद हालांकि अभी लखनऊ में इस सेवा को आरम्भ नहीं किया गया है जिसका कोई औचित्य नहीं है। विज्ञान और तकनीक के इस दौर में किसी आदेश के कार्यान्वियन में इस प्रकार का विलम्ब अक्षम्य है।

2024 का ज्ञानपीठ सम्मान अप्रतिम और विशिष्ट कवि/कथाकार विनोद कुमार शुक्ल को दिए जाने की घोषणा हुई है जो स्वागत योग्य है। अभी पिछले साल ही उन्हें अमरीका के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पैन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था जो हिंदी लेखकों के लिए गर्व और गौरव का विषय था। अनेक काव्य संग्रहों के साथ 'नौकर की कमीज', 'खिलेगा तो देखेंगे' और 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' जैसे अद्वितीय उपन्यासों के लेखक श्री शुक्ल बिना किसी शोरशराबे या निर्ल्लज्ज प्रचार के अपने रचनाकर्म में संलिप्त रहे हैं। कथाक्रम की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई।

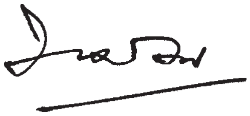

अगला अंक (105) : जुलाई–सितम्बर –2025

कथा क्रम

मधुरेश, दीपक शर्मा, नमिता सिंह, कंवल भारती, उर्मिला शिरीष, राजेन्द्र लहरिया, डॉ. चंद्रेश्वर, फरजाना मेंहदी, संजय कुमार सिंह, मानोषी चटर्जी, इंद्रजीत कौर, विनीता शुक्ला, मनोज शर्मा, मधु संधु, धीरेन्द्र कुमार पटेल, मुकेश गर्ग व अन्य।

चुनिन्दा कहानियां, लेख, संवाद, लघु कथाएं, समीक्षा, रपट एवं कला-संस्कृति-रंगमंच से जुड़ी सामग्री। पठनीय तथा संग्रहणीय।

कथा नेपथ्य

शरतचन्द्र की कहानियां : समय, समाज और स्त्री-दृष्टि

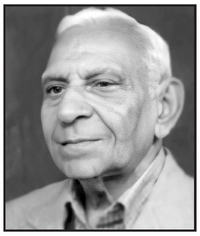

❑ मधुरेश

वरिष्ठ एवं प्रख्यात आलोचक
जन्म : 10 जनवरी, 1939 को बरेली उत्तर प्रदेश में।
40 से अधिक आलोचना पुस्तकों के रचयिता। प्रमुख हैं- 'हिंदी कहानी अस्मिता की तलाश, राहुल का कथाकर्म, हिंदी कहानी का विकास, क्रांतिकारी यशपाल, हिंदी उपन्यास का विकास, अमृतलाल नागर- व्यक्तित्व और रचना संसार, कहानीकार जैनेन्द्र कुमार : पुनर्विचार, मार्क्सवादी आलोचना और शिवदान सिंह चौहान, आलोचक का आकाश आदि।
सम्मान : समय माजरा सम्मान, गोकुल चंद्र शुक्ल आलोचना सम्मान, प्रमोद वर्मा आलोचना सम्मान सहित कई सम्मानों से समादृत।
संपर्क : 25, विष्णु विहार, अजबपुर कलां, देहरादून-248121
मो. 9319838309

शरचचन्द्र की मूल प्रतिभा उपन्यासकार की है। उनकी अधिकतर कहानियां उपन्यास की रचना-प्रविधि वाली हैं। वे धीरे-धीरे रचना-तत्वों को संजोकर मनुष्य के भावों की दिशा में बढ़ते हैं। और पुंखानुपुंख उस ओर विस्फोटक स्थिति की ओर आते हैं जहां कहानी का सार-तत्व अपना कार्य करता है। इस प्रयास में उनकी अधिकांश कहानियां उपन्यास के निकट पहुंचती दिखाई देती हैं। चाहे स्वयं शरत् हो या उनके अधिकारी विद्वान डा. सुबोध चन्द्र सेनगुप्त, एक ही रचना को लेकर उपन्यास और कहानी के बीच के भेद को सुनिश्चित कर पाना कठिन होता है। 'काशीनाथ' 'चन्द्रनाथ' आदि छोटे उपन्यासों को प्रायः कहानी मानकर ही उनकी चर्चा की जाती रही है। शरत्चन्द्र ने अपने लगभग पैंतीस वर्ष को रचनाकाल में कुल जमा बीस-इक्कीस कहानियां लिखी हैं। उनकी पहली कहानी 'मंदिर' 1903 में प्रकाशित हुई थी जिसे 'कुंतलीन पुरस्कार' के अंतर्गत जलधर सेन जैसे सुधी संपादक व आलोचक ने 150 कहानियों के बीच सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में चयनित किया था। वह कहानी शरच्चन्द्र के नाम से प्रकाशित न होकर उनके हमउम्र मामा सुरेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय के नाम से प्रकाशित हुई थी। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में लिखना शुरू करके भी अपनी रचनाओं के प्रकाशन को लेकर वे बेहद संकोची थे। बाद में, रंगून के प्रवास में, जब उनके मित्रों ने कुछ रचनाएं प्रकाशित करवाई तो शरत् उन्हें बरजते ही रहे कि इस तरह बचपन में लिखी रचनाओं को छपवाकर वे उनके नाम को क्यों मिट्टी में मिला रहे हैं।

शरच्चन्द्र 'चन्द्रनाथ' को कहानी मानकर 3 मई 1913 के पत्र में रंगून से लिखते हैं, 'चन्दनाथ' में जो परिवर्तन उचित मालूम हुआ, वह कर दिया है और भविष्य में इसी प्रकार के परिवर्तन करुंगा। 'चन्द्रनाथ' कहानी की दृष्टि से बहुत मीठी कहानी है पर उसमें अतिशयता बहुत है। बचपन में, विशेषकर यौवन के आरम्भ में इस तरह की रचना स्वाभाविक है, इसीलिए ऐसा संभव हुआ है।'

इस अनिश्चिताजन्य कठिनाई को कारण शरत् की कहानियों के लिए नाथूराम प्रेमी द्वारा प्रकाशित शरत्-साहित्य में उल्लिखित कहानियों को इस आलेख का आधार बनाया गया है। प्रकाशक की घोषणानुसार क्राउन साइज़ के 150 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य डेढ़ रुपया होता था। जब 'विप्रदास' प्रकाशित हुआ, उस 240 पृष्ठों वाली पुस्तक का मूल्य दो खण्डों के हिसाब से तीन रुपया ही था। इसीलिए उसके परवर्ती किसी संस्करण में उसमें 'सती' नामक एक कहानी और 'तरुणों का विद्रोह' शीर्षक एक निबन्ध और जोड़ा गया। उसके अनुसार शरच्चन्द्र की कहानियों की संख्या, नाम सहित इस प्रकार है:

1 सुमति (रामेर सुमति) (2) पथ-निर्देश (3) अनुपमा का प्रेम (4) अंधकार में आलोक (5) तस्वीर (छवि) (6) प्रकाश और छाया (7) विलासी (8) एकादशी वैरागी (9) बाल्यस्मृति (10) बिंदो का लल्ला (बिंदुर छेले) (11) बोझा (12) मंदिर (13) मुकदमे का नतीजा (14) हरिचरण (15)

हरिलक्ष्मी (16) अभागिनी का स्वर्ग (17) निष्कृति (18) अनुराधा (19) महेश (20) पारस (21) सती। इन कहानियों के साथ ही उन्होंने एक लंबा निबंध 'नारी का मूल्य' (नारी मूल्य) भी लिखा।

जब मित्रों ने 'शिशु' नामक बड़ी कहानी 'बड़ी दीदी' नाम से प्रकाशनार्थ 'यमुना' में भेजी तो लंबी होने के कारण संपादक ने उसे धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया। लेखक का नाम उसमें चौथी और समापन किस्त के साथ दिया गया। इस बीच कहानी को लेकर घोर चर्चा हुई। जब तक लेखक का नाम स्पष्ट नहीं हुआ, लोगों ने उसे रवीन्द्रनाथ की कहानी समझा। कहानी के अनेक रसिक पाठक उनके पास भी पहुंचे और वस्तु स्थिति जाननी चाही। लोगों ने रवीन्द्र नाथ से यह तक पूछा कि उन्होंने कहानी छद्म नाम से क्यों प्रकाशित की? रवि बाबू की स्पष्ट नकार के बावजूद स्वयं उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि बांग्ला साहित्य में एक नए नक्षत्र का उदय हुआ है।

किशोर जीवन में, भागलपुर में जिस लड़की से शरत बाबू आत्मीय हुए थे, विवाहित होने पर भी उसे आजीवन भूल नहीं सके। इस बात को अधिकांश लोग जानते थे। पर एक सम्भ्रान्त परिवार की विधवा लड़की का नाम लेने पर लोगों को भय और संकोच हो रहा था। अब उसका नाम प्रकट हो गया है। वस्तुतः यही निरूपमा देवी संपूर्ण शरत्-सहित्य में प्रच्छन्न नायिका के रूप में उपस्थित है। शरत् ग्रंथावली के हिंदी संपादक विश्वनाथ मुखर्जी ने तो यहां तक लिखा है, 'सच तो यह है कि इस चातक तृष्णा के कारण ही शरत् एक सफल लेखक हो सके।' (पृ. 5/745)

निरूपमादेवी के पिता नफरचंद्र भागलपुर के सिविल जज थे। सन् 1883 में जन्मी निरुपमा का दस वर्ष की आयु में सन् 1893 में का विवाह कर देने पर वे एकान्त में रोते और पाश्चाताप करते थे। इस परिवार में शरत् बाबू का प्रवेश निरूपमा के भाई विभूति भूषण भट्ट के माध्यम से हुआ। घर में पुस्तकों का विशाल भंडार था। यहां चाय और जलपान के साथ तंबाकू की सुविधा भी थी। लड़कों की स्ट्डी में जज साहब नहीं आते थे। निरन्तर आने-जाने रहने के कारण शरत् घर के सदस्यों के रूप में मान लिए गए थे। इसका प्रमाण स्वयं निरूपमा देवी के आलेख से प्राप्त होता है। शरत् के कारण ही निरूपमा देवी का पढ़ने-लिखने का शौक पैदा हुआ। यह देखकर पिता ने सोचा कि जब मैं बेटी के विधवा हो जाने पर इतना दुखी हूं, तो वह कितना अनुभव करती होगी? यदि साहित्य में वह अपने को भुला सकती है तो यह कल्याणकारी है।

निरुपमा देवी कभी अपने भाइयो के मित्रों के सामने नहीं आई थी। 1897 में विधवा हो जाने के बाद अगले वर्ष पति का वार्षिक श्राद्ध था। इसी दिन शरत् ने निरुपमा देवी को प्रत्यक्ष रूप में देखा था। पिंडदान वाले दिन की चर्चा करते हुए निरुपमा देवी ने लिखा है, 'वे (शरत् बाबू) हम लोगों के कठोर अवरोध प्रथा विशिष्ट गृहान्तपुर में आत्मजनों की तरह प्रवेश करते रहे। उस दिन मेरे पति का श्राद्ध दिवस था। यमुनिया नदी के कछार के पास एक ठाकुरबाड़ी (मंदिर) था। वहीं अनुष्ठान हो रहा था। मेरी एक मातृतुल्या विधवा भ्रातृजाया (जेठ की बहू) ने मुझे वहां ले जाकर एक आसन पर बिठाया। मैंने देखा कि मेरे भाई तथा बहनोई कोई नहीं था। (शायद दुख के कारण) छोटे भैया और एक सज्जन थे जो दौड़-धूप कर रहे थे। बाद में पता लगा कि वे शरद् दादा थे। श्राद्ध कर्म में पुरोहित द्वारा चूक हो जाने के कुछ देर बाद जब मैंने संशोधन करने के लिए कहा तब उन्होंने बड़े भाई के रूप में कहा-,'कितनी बड़ी गलती हो गई? पहले क्यों नहीं बताई?' श्राद्ध के समय एक शहर की मक्खी ने मुझे काटा तो मैं चुपचाप बैठी रही। आसन से हिलना नहीं चाहिए। बार-बार छोटे दादा से क्षत स्थान पर दही व शहद लगाने का आदेश देते रहे जबकि मेरा उनसे सामान्य परिचय था। पड़ोसी और दादा के मित्र के रूप में सहायता करने आए थे। श्राद्ध के बाद भाभी के साथ घर की ओर रवाना हुई तो देखा कि शरत् दादा तेजी से दौड़ते हुए आ रहे हैं। उनके हाथ में एक पोटली थी। भाभी के हाथ देने पर देखा गया कि उसमें मेरे जेवर थे। उत्तेजना के कारण आते समय पोटली छोड़ आई थी। उस वक्त भाभी, छोटे भैया और शरद दादा सभी रो रहे थे। दूसरों के दुख में शरत् दादा दुखी होते हैं, यह उसी दिन प्रकट हो गया।' (शरत्-समग्र पृ.5 – 650/651)

'आलो' पत्रिका की योजना ठप्प हो जाने के बाद 'छाया' नाम से एक हस्त लिखित पत्रिका निकाली गई। 'छाया' के बारे में सुरेन्द्र नाथ गांगुली की टिप्पणी है, 'इस निभृत साधना में गिरीन भाई और मैं सहयोगी बना। शरत् को कब गुरु के रूप में मान लिया, यह नहीं जानता, पर उनका यह अधिकार इन पर बराबर बना रहा। हमारी इस सभा में कुल छः सदस्य थे। शरत् चंद्र चट्टोपाध्याय, विभूति भूषण भट्ट, निरूपमा देवी, योगेश चंद्र मजूमदार, गिरीन्द्रनाथ गंगोपाध्याय और मैं। इनमें निरूपमा देवी नेपथ्य में रहकर सहयोग देती रहीं। यह सभा शनिवार और रविवार को होती थी। निरूपमा देवी को काव्य में अधिक नंबर मिलते थे। निरूपमा देवी की रचनाएं 'श्रीमती देवी' नाम से छपती थीं। जब गद्य लिखतीं तब शरत् और छोटे भैया के बीच प्रतियोगिता होती। विषय का निर्वाचन शरत् करते। एक कट्टर आलोचक के रूप में ख्यात योगेश कुमार मजूमदार संपादक थे।

शरत्चन्द्र अचानक वर्मा क्यों चले गए, यह बात सामान्य